जो बच रहता है

(उनकी नज़र से, जो फिर से चल पड़ते हैं)

FERDINANDO FREGA

“चिकित्सालय मरीज़ों को ठीक करता है।
एक स्नेहमयी सामुदायिकता मनुष्यों को सँभालती है।”

I. जो बच रहता है

मैं मनोरंजन-कक्ष में था, वही कक्ष जो दोपहर के विश्राम, सिगरेट और बातचीत के लिए मरीज़ों के लिए खुला रहता है — और हमारे लिए भी, उन साथियों के लिए, जो अपने बीमारों को वापस घर ले जाने की प्रतीक्षा में हैं।

मुझे कोई बेचैनी नहीं थी, पर मैं सतर्क था: इस बात को लेकर कि कोई व्यक्ति बीमारी के भीतर कितना नाज़ुक हो जाता है, ऐसी बीमारी जो अक्सर अपंग कर देती है और जिससे बच निकलने का कोई रास्ता नहीं, ऐसी बीमारी जो किसी की उम्र नहीं देखती।

वहाँ पाँच पुरुष और एक स्त्री थे, सब पहियेदार कुर्सियों पर बैठे हुए। वे मेरी ओर मुड़े और पूछने लगे कि मेरी उम्र क्या है, मैं क्या काम करता हूँ, किस चीज़ से मेरा वास्ता है, मेरी साधना क्या है; और अंत में वे यह जानना चाहते थे कि राजनीति और धर्म के कुछ सवालों के बारे में, और कुछ जानी-मानी हस्तियों के बारे में मैं क्या सोचता हूँ।

उनकी आँखें बुझी हुई थीं, उस मनुष्य की आँखें जो केवल इस बात की प्रतीक्षा में है कि रोशनी बुझ जाए। और उसके बदले मैंने, उसी रोशनी को, फिर से जला दिया।

लोगों के साथ रहने का मेरा यही तरीक़ा है: उन्हें मुस्कराना। मैं कोई अभिनेता नहीं हूँ, न ही चिकित्सालय का कोई विदूषक — बस अनेकों जैसा एक आदमी, पर रोटी जितना आम नहीं।

फिर उन्होंने मुझसे एक क़िस्सा सुनाने को कहा। और यहाँ मुझे पाठक के सामने ईमानदार होना पड़ेगा: जो मैंने सुनाया वह कोई शिष्ट चुटकुला नहीं था, और किसी और जगह मैं उसे न सुनाता। पर वहाँ, उस कक्ष में, ज़िंदगी ने जो उनसे छीन लिया था उस पर हँसने की अनुमति देना उन्हीं के अधिकार में था, अपने आप को देना। और उन्होंने मुझसे इसकी माँग की। इसलिए मैं इसे वैसा ही सुनाता हूँ जैसा वह था, क्योंकि उसे पूरी तरह साफ़-सुथरा कर देना उनके साथ विश्वासघात होता।

मैं तुम्हें बताता हूँ — मैंने कहा — एक ऐसे आदमी के बारे में जो पहियेदार कुर्सी पर था, न हाथ थे न पैर, और जिसने एक दिन किसी वैवाहिक वेबसाइट के विज्ञापन का जवाब दिया।

और अगर कोई न मुस्कराए, मैंने जोड़ा, तो इसमें मेरा दोष नहीं: इसका बस इतना अर्थ होगा कि आज उसका दिन नहीं है।

एक बहुत धनी स्त्री, ख़ासी उम्रदराज़ — क़रीब अस्सी बरस की — अपनी पैंतालीस साल की भतीजी की मदद से, एक पति की तलाश में थी। पर ज़िंदगी ने उसे जो कुछ सिखाया था, उसके बाद उसके मन में साफ़ था कि उसे कैसा आदमी चाहिए: ऐसा जो कभी हाथ न उठाए, ऐसा जो घर पर ही टिका रहे, और — यूँ कहें — उदार नाप-जोख वाला एक आदमी।

दरवाज़े पर दस्तक हुई। उसने अपने सामने पाया इस आदमी को, पहियेदार कुर्सी पर, न हाथ न पैर, पर जवान और सुदर्शन, विज्ञापन के लिए अर्ज़ी देने आया हुआ।

उसने उससे बातचीत की।

वह ऐसा आदमी चाहती थी जो कभी हाथ न उठाए: और उसके तो हाथ ही न थे। पहली बात उसके पक्ष में।

वह चाहती थी कि वह घरेलू हो, शांत हो: और वह पैरों के बिना, अपनी कुर्सी पर था। दूसरी बात उसके पक्ष में।

और आख़िर में उसने उससे कहा कि वह चाहती है कि वह ख़ूब सम्पन्न हो। और उसने, पूरी गंभीरता से, जवाब दिया: “मोहतरमा... और आपके ख़याल से मैंने दरवाज़ा किस चीज़ से खटखटाया?”

उस पल वे पाँचों पुरुष ठहाका मारकर हँस पड़े, और रुक ही न सके। पर वह स्त्री गंभीर बनी रही, अविचल। और मेरा सारा ध्यान उसी की ओर चला गया।

उसके लिए मेरे पास कोई दूसरा रूप न था, मैंने कुछ तैयार नहीं किया था। पर मुझे एक कौंध सी सूझी: मैंने उससे कहा कि, अगर वह चाहे, तो मैं उसे उस उम्मीदवार का फ़ोन नंबर दे दूँ। उसकी आँखें चमक उठीं, वह मुस्कराई, और बोली: हाँ, हाँ।

मैंने उससे एक मुस्कान जीत ली थी। मैं अपने लक्ष्य तक पहुँच गया था। उस पल का बस इतना ही बच रहा — और वही काफ़ी था।

जब मैं उस संस्थान से निकला, तो सबने पूछा कि मैं फिर कब लौटूँगा, और क्या मेरे पास और भी क़िस्से हैं।

II. उपसंहार

लोग समझते हैं कि जो बच रहता है वह कोई चिकित्सा-दस्तावेज़ है, कोई एक्स-रे, घर पर जारी रखने वाली कोई चिकित्सा, या जल्दबाज़ी में किसी काग़ज़ के टुकड़े पर घसीटा हुआ कोई फ़ोन नंबर।

वे ग़लत हैं।

जब कोई व्यक्ति किसी संस्थान से जाता है, तो जिन चीज़ों से उसका इलाज हुआ, उनमें से लगभग कुछ भी वह अपने साथ नहीं ले जाता।

वह लोगों को ले जाता है।

वह आवाज़ों को ले जाता है।

आदतों को।

गलियारों को।

समयसारणियों को।

उन चेहरों को जिन्होंने हफ़्तों, या महीनों तक, उसके जीवन के समय को अंकित किया।

चिकित्सा अभिलेखागारों में रह जाती है।

स्मृति कोई और राह पकड़ लेती है।

और उसी स्मृति के बारे में मैं कहना चाहता हूँ।

III. लेखक-परिचय

यह रचना किसी के आदेश पर नहीं लिखी गई।

इसे बेचा नहीं गया।

इसे किसी व्यावसायिक उद्देश्य से नहीं बनाया गया।

इसे इसलिए लिखा गया ताकि पुनर्वास के मोल की, मानवीय गरिमा की, और मनुष्यों के आपसी रिश्ते की गवाही दी जा सके।

एकमात्र माँगा गया शुल्क एक प्रतीकात्मक डॉलर है — रचना के मूल्य के रूप में नहीं, बल्कि देखभाल, उम्मीद और ज़िम्मेदारी की संस्कृति के प्रति एक साझा प्रतिबद्धता की गवाही के रूप में।